

ओ रेवा रानी. चरण पखारों दूधापानी
मेरी महारानी. अब न बनो अंजानी

कंठ-अमर से निकसी रेवा ३३३३
तप की खूब निशानी ३३३३ ॥२॥

मेरी महारानी-----

गौरा सहित शम्भू जहाँ राजे ॥२॥
अमर कंठ रज धानी ३३३३ ॥२॥

मेरी महारानी-----

तप में तपी तपाईं प्रगटीं ॥२॥
दया करो कल्याणी ३३३३ ॥२॥

मेरी महारानी-----

तापस भेष तुम्हें प्रिय लागे
पिता भी औघड़दानी ३३३३ ॥२॥

मेरी महारानी-----

दास "श्रीबाबाश्री" ये ध्यान धरौ मैया ॥२॥
दिखें राह अंजानी ३३३३ ॥२॥

मेरी महारानी-----